

आज कल हमारी शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप दयनीय हो गया है। बच्चों को बचपन से ही यही बताया जाता है कि भारत शुरू से दूसरे देशों पर निर्भर रहा है। भारत तकनीकी रूप से पिछड़ा हुआ देश था। शास्त्रों का कोई महत्व नहीं है। इसका सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह है कि हमारे देश की जनता मानसिक रूप से गुलाम हो जाती है और उनका स्वाभिमान मर जाता है। आइए इस लेख द्वारा जानें कि वास्तविकता क्या थी! प्रस्तुत लेख [भाई राजीव दीक्षित जी](#) के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को स्वयं भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

[https://docs.google.com/file/d/0B8n\\_36gK-KF4Y21LY04zalRZTjQ/edit?usp=sharing](https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4Y21LY04zalRZTjQ/edit?usp=sharing)

## **भाषा**

सबसे पहली भाषा और लिपि भारत ने दुनिया को दी। सबसे पहली भाषा संस्कृत है और लिपि है ब्राह्मी। भारत ने दुनिया को लिखना सिखाया। यह लिपि भारत से चीन में गई और चीन के इतिहासकार इस बात को पूर्ण ईमानदारी से मानते हैं कि चीन के ऋषि मुनि भारत में आकर लिखना सीखे। German, Italian, Russian, Polish आदि मूल भाषाओं के भाषाकार इस बात को मानते हैं कि उनकी भाषा का विकास संस्कृत में से ही हुआ है। German वायुसेवा Lufthansa संस्कृत शब्द है जिसकी पुष्टि स्वयं जर्मन लोग करते हैं। यह शब्द बना है 'लुप्त'+ 'हंस' से। खुद को आर्य कहने में जर्मन गर्व का अनुभव करते हैं और स्वयं को भारतीय संस्कृति से जुड़ा मानते हैं। महर्षि चरक को सम्मान देते हुए जर्मन लोगों ने Charakology नमक विभाग बना दिया। पूरी दुनिया के वैज्ञानिकों का यही मानना है कि कंप्यूटर के लिए सबसे अच्छी भाषा संस्कृत है। उसका कारण यह है कि संस्कृत की व्याकरण सबसे समृद्ध और सशक्त है! वाक्य निर्माण के जो नियम हैं उनमें बदलाव नहीं होता। पाणिनि व्याकरण से लेकर अब तक संस्कृत में 1,02,78,50,00,000 शब्दों का इस्तेमाल हो चुका है। बड़ी से बड़ी बात को संस्कृत भाषा बहुत ही कम शब्दों में कह देती है। वेंग सांग, चीनी यात्री, कहता है कि भारत में 20000 से ज्यादा शोध वैज्ञानिक दुनिया के कोने कोने से आए हुए हैं।

## **शिक्षा व्यवस्था**

Monitorial शिक्षा व्यवस्था केवल भारत में ही थी। जिसमें एक ही शिक्षक कई कक्षा नायकों (Class Monitor) को तैयार कर देता था जो गुरु की जगह पढ़ाता था और इस तरह एक ही गुरु के संरक्षण में पूरा का पूरा गुरुकुल और विश्व विद्यालय चलता था। यह कहना है 18वीं शताब्दी में Benjamin Franklin और Thomas Munroe का जो कि पेशे से East India Company के educationist थे। इन्होंने ब्रिटिश सरकार को सुझाव दिया कि उन्हें भी ऐसी ही शिक्षा प्रणाली रखनी चाहिए।

### शल्य चिकित्सा (Surgery)

इंग्लैंड का एक सर्जन था Dr. Haulcott मद्रास से 1795 में शल्य चिकित्सा सीखकर इंग्लैंड गया और वहाँ Fellow of Royal Society की स्थापना की। वह बार बार कहता था कि मैंने यह विद्या भारत से सीखी और यूरोप को सिखाया। हजारों वर्ष पुराना शास्त्र 'सुश्रुत संहिता' में ऑपरेशन के लिए जो tools और equipments चाहिए होते हैं, ऐसे 125 उपकरणों का वर्णन है। इंग्लैंड ने इनमें से एक भी उपकरण में सैकड़ों सालों तक कोई बदलाव नहीं किया। अनार खाने से खून बढ़ता है, गाजर खाने से आँखें तेज़ होती हैं, मेथी खाने से कफ़ और वात रोग ठीक होते हैं; यह सब दुनिया ने भारत से सीखा। जिन्हें हम आज मसाले कहते हैं उनके औषधीय गुणों के बारे में और उन्हें रोज़ कैसे खाना है, यह दुनिया को भारत ने सिखाया। महान आयुर्वेदाचार्य वाग्भट्ट जी ने बताया कि खाने को सूर्य की रोशनी और हवा मिलनी चाहिए। ऐसा खाना ही खाने लायक होता है। पाश्चात्य जगत के कई वैज्ञानिकों ने शोध करके इसकी पुष्टि की और कहा कि pressure cooker में खाना पकता नहीं है बल्कि टूटता है जो कि शरीर के लिए नुकसान देह है! Plastic Surgery अंग्रेजों ने 1780 के बाद भारत से सीखी। Dr. Oliver नामक एक अंग्रेज़ 1710 में बंगाल आया। उसने अपनी diary में लिखा कि जिस चेचक की बीमारी से दुनिया में लाखों लोगों की मौत हो रही है, उस बीमारी से लड़ने के लिए भारतवासी एक टीके का इस्तेमाल करते हैं। वे चेचक से पीड़ित व्यक्ति की पस को एक सुई द्वारा स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में डाल देते हैं जिससे व्यक्ति के शरीर में चेचक की प्रतिरोधक क्षमता पैदा हो जाती है। आगे चलकर यही सिद्धांत बना Immunization का जब Dr. Oliver इंग्लैंड गया और वहाँ पर डॉक्टरों की टीम के साथ शोध किया।

### तकनीकी

दुनिया को कृत्रिम बर्फ बनाना भारत ने सिखाया। भारत में एक वैज्ञानिक चक्रवर्ती राजा हुए जिनका नाम था हर्षवर्धन। वे रसायन शास्त्र के बहुत बड़े विद्वान थे। एक बार जब उनकी बेटी को बुखार आया तो उन्होंने बर्फ बनवाई। उसके बाद भारत में बर्फ बनाने का सिलसिला शुरू हुआ। यह बात है 5वीं शताब्दी की। वहीं अंग्रेजों ने बर्फ बनाना 18वीं शताब्दी में सीखा।

चीनी लोगों ने अपने दस्तावेजों में लिखा है कि उन्होंने कागज़ बनाना भारत से सीखा। भारत में 2000 सालों से सन और मूँज की घास से कागज़ बनाया जाता रहा है।

महर्षि अगस्त्य ने dry cell बनाने की विधि सिखाई। सिक्के सबसे पहले भारत ने दुनिया को सिखाया। जस्ता (Zinc) तथा पारा (Mercury) बनाना भारत ने दुनिया को सिखाया। सबसे पहले बारूद भारत ने बनाया जिसका उपयोग फुलझड़ी बनाने में होता था। दुनिया ने उसी तकनीक का इस्तेमाल बम बनाने के लिए किया। पहिया और हल बनाना भारत ने दुनिया को सिखाया। यही नहीं सैकड़ों कृषि के औज़ार भारत ने संसार को सिखाया।

दुनिया में सबसे पहले इस्पात (Steel) भारत ने बनाया। 1795 में एक अंग्रेज़ भारत में आया। उसने अपने लेख में लिखा है कि भारत में इस्पात बनाने का काम तीसरी शताब्दी से हो रहा है। वह कहता है कि पूर्वी और पश्चिमी भारत में लगभग 15000 छोटी फ़िट्रियां हैं। इनमें रोज़ाना लगभग 500 किलो इस्पात तैयार होता है। काम दिन रात चलता रहता है और मजदूरों की टीम 3 shifts में काम करती हैं। भारत का इस्पात विदेशों में सोने के बदले बिकता है क्योंकि उसमें जंग नहीं लगता और ऐसा इस्पात केवल भारत में ही बिकता है।

### महत्वपूर्ण आविष्कार

हम बचपन से यह पढ़ते आए हैं कि दुनिया की सबसे पहली उड़ान Wright भ्राताओं ने 17 दिसंबर 1903 को कैरोलिना, संयुक्त राज्य अमरीका में भरी जो 120 फीट उड़ने के बाद धरती पर आ गिरी। लेकिन दस्तावेज़ मिले हैं इस बात के कि दुनिया की सबसे पहली उड़ान Wright भ्राताओं ने नहीं बल्कि एक भारतीय, जिनका नाम है शिवकर बापूजी तलपदे, ने सन् 1895 में भरी। इस महान वैज्ञानिक ने पहला विमान मुंबई के चौपाटी में अपना तैयार किया हुआ विमान उड़ाया जो 1500 फीट तक उड़ा और सकुशल धरती पर landing की! प्रश्न यह उठता है कि तलपदे जी का नाम फिर क्यों नहीं आया? उत्तर यह है कि उनके साथ एक धोखा हुआ! Rally Brothers नाम की एक ब्रिटिश

कम्पनी ने उनसे कहा कि अगर वो अपने विमान का मॉडल और तकनीक उन्हें दे दें तो बदले में वो उन्हें धन देंगे। भोले भाले तलपदे जी उनकी बातों में आ गए और उन्होंने अपने विमान की सारी जानकारी उस कंपनी को दे दी। वह कंपनी वापिस इंग्लैंड गई और अपना वादा भूल गई। उसने यह मॉडल अमरीका भेज दिया जहाँ Wright Brothers ने अपने नाम पर उसी तकनीक को patent करा लिया।

### गणित एवं खगोलशास्त्र

पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी 4-5 शताब्दी में भारत के महान वैज्ञानिक और गणितज्ञ आर्यभट्ट जी ने निकाली जिसे दुनिया का कोई भी अन्य वैज्ञानिक इन 1600 सालों में चुनौती नहीं दे पाया। वे आर्यभट्ट जी ही थे जिन्होंने पहली बार सूर्य में काले धब्बे होने की बात कही। 20वीं शताब्दी के वैज्ञानिक Stephen Hawkins ने इसी बात को बताकर अपने नाम पर patent करा लिया जिसका नाम दिया गया 'Black Hole Theory'। आर्यभट्ट जी सबसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कहा था कि सारे ग्रह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हैं। शनि ग्रह के सात उपग्रह हैं। आर्यभट्ट जी ने वारों का क्रम तथा सूर्य तथा चन्द्रमा के ग्रहण की भी जानकारी दी।

त्रिकोणमिति आर्यभट्ट जी की ही देन थी। दुनिया में गणित का syllabus भास्कराचार्य जी की कृति 'लीलावती' से लिया हुआ है, जो उनकी पुत्री का नाम था। Pythagoras Theorem को Pythagoras के जन्म से भी 700 साल पहले से भारतवासी 'बोधायन प्रमेह' के नाम से पढ़ते आए हैं। Binomial Theorem आचार्य आर्यभट्ट की ही देन थी। Integral Calculus के प्रणेता थे आचार्य माधवाचार्य तथा Differential Calculus के प्रणेता थे आचार्य भास्कराचार्य जी।

ऐसा और बहुत कुछ है जिसको गिनाने के लिए शायद यह जीवन छोटा पड़ जाए। पर यह बहुत आवश्यक है हम सभी के लिए कि हम सब सच्चाई से रूबरू हों।